ध्वजगीत

(रचयिता—आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

लहराये-लहराये रे, लहराये-लहराये रे,
लहराये-लहराये रे, लहराये 2

ध्वज लहर-लहर लहराये, पूरब उत्तर-फहराये,
सबके मन को भाये, सबका मन हर्षाये,
ये धर्म ध्वजा कहलाये रे...।

लहराये-लहराये रे-ऽऽऽ

ध्वज पाँच रंग का प्यारा, केशरिया सबसे न्यारा,
ज्ञानी महिमा गाये, इन्द्रादि सिर नाये,
यह ज्ञान की ज्योति जलाये रे...।

लहराये-लहराये रे-ऽऽऽ

ध्वज विश्वशांति सिखलाता, ध्वज मैत्री भाव जगाता,
ध्वज के नीचे आओ, ध्वज की शरणा पाओ,
ये सबको पास बुलाये रे...।

लहराये-लहराये रे-ऽऽऽ

ध्वज करुणा रस छलकाये, ध्वज दया का नीर बहाये,
ध्वज गौरव कहलाये, ये झुकने न पाये,
कल्याणक पाँच मनाये रे...।

लहराये-लहराये रे-ऽऽऽ

''अहो स्थैर्यं महात्मनाम्।''

अर्थात्—महापुरुषों का धैर्य ही आश्चर्य जनक होता है।

(आदिपुराण-88वाँ पर्व, 57-38)